जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक ९ वा ❖ मे २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● वीरायतन के ५० वर्ष	१५	● हास्य जागृति	६५
● आदिनाथ प्रभू ऋषभदेव की अक्षय तृतीया याद दिलाती	२०	● वाचकांचे मनोगत	६७
● व्यापारी क्या है ?	२२	● अरिहंत जागृती मंच, पुणे	६८
● जैन समाजाच्या यशाचे व श्रीमंतीचे रहस्य	२३	● रांका ज्वेलर्स, खराडी – उद्घाटन	६९
● कव्हर तपशील	२४	● जयती जैनम् साधना तीर्थ – भिवरी	७०
● अंतिम महागाथा		● श्री. दिलीपजी चोरबेले, पुणे – सन्मान	७१
❊ ५४ : महाज्योति का महानिर्वाण	३१	● आनंदऋषिजी नेत्रालय – अहमदनगर	७२
● सुविचार	३६	● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – अहमदनगर	७२
● गुण देखें, गुणी बनें	३७	● संचेती ट्रस्ट, पुणे – पाणपोई	७३
● ज्ञान का भण्डार है आपका मस्तिष्क	४१	● प्रा. डॉ. संजय चोरडिया – उपाध्यक्षपदी	७४
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : शील (१)	४३	● सौ. सुषमा चोरडिया – अॅवार्ड	७४
● सुक्ति से मुक्ति : एकाग्रता	४७	● प्रा. डॉ. संजय चोरडिया – अॅवार्ड	७५
● आचार्य आनंदऋषिजी म.सा. निबंध स्पर्धा	४८	● डॉ. रुमादेवी – सुर्यभूषण राष्ट्रीय पुरस्कार	७५
● प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर	५९	● सौ. विमल बाफना, पुणे – स्त्री रत्न अॅवार्ड	७६
● जीवन बोध : सोने का पहाड	६३	● श्री. महेन्द्रजी कोठारी, पुणे	७७
		● श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान – लोणीकंद	७७

- पूना हॉस्पिटल – रक्तदान शिबीर ८३
- साधर्मिक सेवा संघ, पुणे ८३
- भगवान महावीर स्वामी २६२२ वा जन्म कल्याणक महोत्सव ८४
- श्री. तुषार गांधी – सन्मान ९१
- डॉ. कमलकुमार जैन – पुणे ९३
- श्री. राजेंद्र सुराणा, पुणे – उपाध्यक्षपदी ९३
- डॉ. सुशिलजी मुथियान – उपाध्यक्षपदी ९३
- भगवान महावीर ९५
- स्त्री एक रुप अनेक ९६
- जैन सोशल ग्रुप – पिंपरी चिंचवड ९६
- श्री गिरीषजी पारेख – लोणावळा ९६
- नफरत Vs प्यार ९७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

वीरायतन के ५० वर्ष

हर साधक का लक्ष्य है आत्मविकास । जिसके तीन चरण है – अहिंसा, करुणा और मैत्री । अहिंसा अर्थात् अशुभ का निवारण, पाप का निषेध, हिंसा से निवृत्ति – यह प्रथम चरण । द्वितीय चरण है अनुकम्पा या करुणा अर्थात् शुभ का विधान, शुभ में प्रवृत्ति और तीसरा चरण है मैत्री – शुभ का विस्तार ।

''श्री ताई माँ''
आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

वस्तुत: निवृत्ति और प्रवृत्ति ये दोनों अलग नहीं है । दोनों का एक अखण्ड रुप है अहिंसा ।

लेकिन प्रभु महावीर की अहिंसा का यह विराट रुप समय के साथ सिकुडता गया और मात्र निवृत्ति में ही अहिंसा की मान्यता बध्दमूल हो गयी । दूसरा चरण उपेक्षित हो गया ।

फिर भी सौभाग्य है हमारा कि आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा में अनेक ऐसे प्रभावक आचार्य हुए हैं जिन्होंने गुफा, मन्दिर, मूर्ति आदि के चिरजीवी स्थापत्य द्वारा प्रवृत्तिमूलक अहिंसा को उजागर किया । और प्रभु के जनहितकारी संदेश को प्रवाहित रखा । इसी प्रवाह को और अधिक गति देने के लिए आचार्य श्री ताई माँ का एक विनम्र प्रयास है । उनका चिन्तन है कि तीर्थंकर महावीर ने कैवल्य प्राप्ति के बाद गाँव–गाँव घूमकर जनता को करुणा और मैत्री का बोध दिया । संघ की स्थापना की, अनुकम्पा को सम्यक्त्व का लक्षण बताया और रोगी की सेवा को उन्होंने ऊँचा स्थान देते हुए तप बताया ।

इसी परिप्रेक्ष्य में पूज्य ताई माँ का निर्णय है कि जब दीक्षित वर्ग सेवा का उपदेश दे सकता है तो वह स्वयं भी सेवा कर सकता है ।

इस चिन्तन के साथ उन्होंने ''सक्रिय सेवा'' (Compassion in action) का मार्ग चुना । और इस मार्ग को उन्होंने बड़ा ही अर्थगंभीर अश्रुतपूर्व और अभूतपूर्व नाम दिया – 'वीरायतन' जिसका अर्थ है महावीर का समवसरण अर्थात् महावीर की त्रिपथगा करुणा का प्रवाह ।

पूज्य ताई माँ के इस नये मार्ग एवं नई दिशा को राष्ट्रसन्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज ने संरक्षण, समर्थन एवं आशीर्वाद दिए । और ताई माँ निकल पड़े तीर्थंकर महावीर की पावन भूमि की ओर ।

प्रभु की उस धन्यधरा पर अभाव, अशिक्षा, उत्पीड़न और दरिद्रता देख विचलित हो उठे पूज्य ताई माँ । वह बिहार जो तीर्थंकरों की पावनभूमि रही है, उस गौरवशाली अतीत और समृध्द प्रदेश की जनता विषमताओं से भरा जीवन जी रही है यह देखकर उन्होंने निश्चय किया कि बिहार के उस गौरव को पुन: स्थापित करना है । और उन्होंने तय कर लिया कि वीरायतन का कार्य बिहार की धरती से प्रारम्भ होगा ।

पूज्य श्री रम्भाकुंवरजी महाराज, पूज्य श्री सुमतिकुंवरजी महाराज एवं श्रीमती प्रेमकुंवर कटारिया के आशीर्वाद से सन् १९७३ में राजगीर बिहार में वीरायतन का कार्य प्रारम्भ हुआ ।

मार्ग नया था, मुश्किलों से भरा था । श्री ताई माँ बिना रुके, बिना थके, हर चुनौती का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे । उनके इस क्रान्तिकारी कार्य को दृढ़ता के साथ समर्थन एवं अनन्य सहयोग दिया श्री नवलमल फिरोदिया (आदरणीय बाबा) ने ।

केवल तीर्थभूमि में ही नहीं, देश में करोड़ों लोग हैं

जो अभाव में, अशिक्षा में, पीड़ा में जी रहे हैं । हाथ फैलाएँ खड़े हैं।

तीर्थंकर महावीर ने आत्ममंगल के साथ 'मेतिं भूएसु कप्पए' का सर्वमंगल संदेश दिया है । इसी संदेश को लेकर पूज्य ताई माँ बाढ़ पीड़ित, भूकम्पग्रस्त, प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त एवं असहाय जनता के बीच पहुँचकर उनके साथ खड़े रहे, उनके आँसुओं को पोंछने का कार्य किया अपने साध्वी संघ के साथ स्वयं जाकर सेवाकार्य के द्वारा प्रभु की करुणा का प्रकाश पहुँचाया है ।

लोग कष्ट में हो, त्राहि-त्राहि कर रहे हो ऐसे समय में स्वयं अगर प्रभु महावीर होते तो क्या वे हमें आँख बंद करके ध्यान करने का संदेश देते ? या उनकी अनन्त करुणा का प्रवाह प्रवाहित हो जाता ?

ढाई हजार वर्षों से उनकी करुणागंगा बहती चली आ रही है जो हम तक पहुँची है । उसे आगे से आगे प्रवाहित रखना है हमें । इसी संकल्प को लेकर ताई माँ दृढ़ कदमों से आगे बढ़ते रहे ।

मनुष्य जाती का सौभाग्य रहा कि श्री ताई माँ ने वज्र संकल्प के साथ काम किया और उस कार्य को न सिर्फ समाज ने ही साथ दिया बल्कि उनके साध्वी संघ ने भी दृढ़तापूर्वक साथ दिया । यही कारण है कि वीरायतन का इतना व्यापक विस्तार हो सका ।

उनके इस करुणापूर्ण कार्य ने न केवल लाखों लोगों को जीवन जीने की सही राह दिखाई बल्कि अपनी नई सोच, सत्साहस एवं दूरदर्शिता पूर्वक तथा समयोचित महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया । और दीक्षित वर्ग के हाथ में भी रचनात्मक कार्य देकर जैन समाज को नई दीशा दी । तथा प्रभु महावीर की करुणागंगा को दूर-दूर तक प्रवाहित किया ।

आज सेवा, शिक्षा और साधना के उद्देश्य के साथ पूज्य ताई माँ का समर्पित तेजस्वी साध्वी संघ उनके आशीर्वाद और प्रेरणा से नि:स्वार्थ भाव से रचनात्मक कार्यों द्वारा देश-विदेश में अहिंसा, मैत्री, करुणा और प्रेम के संदेश की सुगंध को फैलाने का पुनीत कार्य कर रहा है ।

इस प्रकार ताई माँ ने स्वकल्याण के साथ जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर जैन इतिहास में एक नये अध्याय का प्रारम्भ किया है। यही कारण है कि २६०० वर्ष की परम्परा में प्रथम बार एक साध्वी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। और प्रथम बार ही भारत सरकार द्वारा एक जैन साध्वी को 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह साध्वी है- 'पद्मश्री' डॉ. आचार्य चन्दनाश्रीजी। ये दोनों ही सम्मानित पद उन्हें उनके जन्मदिन २६ जनवरी को प्राप्त हुए हैं। आचार्य पद १९८७ में एवं पद्मश्री २०२२ में। इसी तरह पूज्य ताई माँ अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित है।

(साधना के मार्ग पर चलते हुए सक्रिय सेवा कार्य का सूत्रपात करनेवाले श्री ताई माँ का विलक्षण जीवन....)

बचपन से ही शकुन्तला अनूठी थी। करुणा उसका जन्मजात गुण था। दूसरों की मदद करना उसका सहज स्वभाव था। जिज्ञासु मेधावी सबके प्रति असीम स्नेह रखनेवाली संवेदनशील बालिका शकुन्तला सबसे अलग थी। उन विलक्षण गुणों ने शकुन्तला के लिए दीक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। और १५ वर्ष की आयु में शकुन्तला ने साध्वी चन्दना के रूप में दीक्षित जीवन प्रारम्भ किया।

सत्य को जानने के लिए दीक्षा के बाद १२ वर्ष तक मौन साधना के साथ व्याकरण, साहित्य, दर्शन, न्याय तथा विभिन्न धर्मग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। लेकिन सत्य प्राप्ति में यह अध्ययन समाधान न दे सका। बाहर मौन था परन्तु अन्तस में प्रश्नों का अंबार था। धर्म क्या शब्दों में है या धर्म जीवन की अनुभूति एवं प्रवृत्ति में है? अगर धर्म प्रवृत्ति और व्यवहार में है तो दीक्षित वर्ग दु:ख से पीड़ित जनता के दु:खमुक्ति के लिए प्रयत्नशील क्यों नहीं? दीक्षित जीवन मात्र आत्मकल्याण के लिए ही स्वकेन्द्रित क्यों है? आखिर

इन प्रश्नों का समाधान ताई माँ ने 'सक्रिय सेवा' के मार्ग में खोज लिया।

और श्री ताई माँ प्रभु की पावन धरा पर प्रभु के चरणों में, प्रभु की वाणी को साकार करने में जुट गए। अज्ञानता और कुपोषण के कारण आँखों की बीमारियों से पीड़ित बिहार की जनता के लिए नेत्र चिकित्सा से उन्होंने जनकल्याण के कार्यों का प्रारम्भ किया। टेन्टों से प्रारम्भ हुआ नेत्र शिविरों का कार्य आज अत्याधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न विशाल आई हॉस्पिटल 'नेत्र ज्योति सेवा मन्दिरम्' में परिवर्तित हो गया है। जहाँ प्रतिवर्ष १५००० आँखों के ऑपरेशन और २,००,००० मरीजों की चिकित्सा होती है। एवं दन्त चिकित्सा होती है। मोबाइल वैन द्वारा गाँव-गाँव में पहुँचकर लोगों को शाकाहार एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करके उनका निःशुल्क इलाज किया जाता है।

इसी प्रकार गुजरात के तीर्थक्षेत्र पालीताणा में विभिन्न सुविधाओं से सम्पन्न एक मॉडर्न आई हॉस्पिटल 'श्री आदिनाथ नेत्रालय' कार्यरत है। जहाँ स्थानीय जनता के लिए अत्याधुनिक साधनों द्वारा उपचार एवं ऑपरेशन का समुचित प्रबन्ध है।

श्री ताई माँ की करुणा एक मजबूत संबल बनकर क्षेत्र और स्थान की सीमाओं से परे पहुँची है। प्राकृतिक आपदाओं में... फिर चाहे वह विनाशकारी भूकंप हो, सुनामी हो, बाढ हो, अकाल या कोविड-१९ महामारी हो! बिना किसी भेदभाव के जनसाधारण एवं पीड़ित लोगों की सहायता के लिए वीरायतन हमेशा तत्पर रहा है। वर्ष २००१ में कच्छ के दिल दहला देने वाले भूकंप में आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से टूटे हुए लोगों का सशक्त आधार बनकर हजारों दिलों में नई आशा का संचार किया है वीरायतन ने।

२०१५ में नेपाल के भूकंप के समय में तत्कालीन मदद और वीरायतन रिहैबिलिटेशन तथा वोकेशनल सेंटर की स्थापना कर ताई माँ ने नया कीर्तिमान स्थापित किया। कोविड-१९ के दौरान भी वीरायतन संस्था ने हजारों लोगों की मदद की। भोजन सामग्री, दवाएँ, सैनिटाइजर्स, मास्क इत्यादि के वितरण के साथ ऑक्सीजन प्लांट भी लगाए गए तथा कोविड-१९ महामारी में अपने माता-पिता को खो चुके बच्चों की शिक्षा एवं समुचित देखभाल का पूरा दायित्व लेने के लिए संकल्प बद्ध हुआ है वीरायतन!

गत ५० वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में ताई माँ का विशिष्ट योगदान रहा है। बिहार, कच्छ, पालिताना, राजस्थान, नेपाल आदि क्षेत्रों में स्थापित शिक्षण संस्थानों द्वारा हजारों बच्चों और युवाओं के सुनहरे भविष्य के सपनों को पूरा करने का प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। बिहार में भगवान महावीर की जन्म भूमि-लिछुवाड़, निर्वाण भूमि-पावापुरी एवं उपदेश स्थली राजगीर में संचालित विद्यालयों के कारण स्थानीय परिवारों के बच्चों के संस्कारों में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है।

हर जाति के बच्चों को संस्कारित करने के लिए ताई मां ने पावापुरी में हरिकेशीय स्कूल की स्थापना की है जिससे इन बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हो रहा है। पावापुरी में ही स्थित वीरायतन B.Ed. कॉलेज में भावी शिक्षकों को आधुनिक विषयों के साथ-साथ बच्चों में उच्च मानवीय मूल्य स्थापित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

२००१ के दर्दनाक भूकंप के पश्चात वीरायतन ने कच्छ में अनेक सुंदर शैक्षणिक संकुलों का निर्माण किया है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त हॉस्टेल, लाइब्रेरी, लैबोरेट्री, स्पोर्ट्स कॉम्प्लॅक्स, ऑडिटोरियम, भोजनालय आदि छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सोलर प्लांट तथा लाखों वृक्षों द्वारा पर्यावरण संरक्षण वीरायतन- कच्छ कैंपस की विशिष्ट पहचान है।

कच्छ की सूखी धरती पर नंदनवन... आदर्श ज्ञान मंदिर... मूल्यनिष्ठ शिक्षण द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्पबध्द जखनिया स्कूल आज

हजारों बच्चों के लिए प्रेरणा का केंद्र है। प्राचीन गुरुकुलों की याद दिलाता पूर्णतः निःशुल्क वीरायतन विद्यापीठ- रुद्राणी...

यहाँ वे बच्चे पढ़ते हैं जहाँ पीढ़ियों से शिक्षा का अभाव रहा है और वीरायतन ले आया है उनके जीवन में ओजस्वी शिक्षा की किरण !

वीरायतन कच्छ में टेक्निकल इंस्टिट्यूट लाने के लिए pioneer है। यहाँ बने State of the Art फार्मेसी, इंजीनियरिंग, BBA तथा BCA कॉलेज मात्र कॉलेज नहीं हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिए सुनहरे भविष्य के लिए आशा का केंद्र हैं, जो उच्च शिक्षा का स्वप्न भी नहीं देख सकते...

आज वे वीरायतन के सहयोग से उत्तम शिक्षा प्राप्त कर सफलता की ऊँचाइयों को छू रहे हैं।

पूज्य ताई माँ द्वारा उद्घोषित परियोजना 'जहाँ जिनालय वहाँ विद्यालय' के अंतर्गत पालीताना, ओसियाजी, सांचौर, जयपुर इत्यादि क्षेत्रों में विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए सुंदर विद्यालय संचालित हैं। गुजरात के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र पालीताना में स्थापित 'तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर' डोली वाला और भील जाति के बच्चों के लिए वरदान स्वरूप बन गया है।

तीर्थंकर महावीर के विश्व मैत्री के दिव्य संदेश को दूर-दूर तक पहुँचाने के लिए ताई मां ने अपने प्रबुध्द साध्वी संघ के साथ नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका, कॅनडा, सिंगापूर, कोलालाम्पुर, हाँगकाँग, शिकागो, लन्दन आदि २५ से अधिक देशों की यात्रा की है। लेस्टर में पूज्य ताई माँ ने जैन धर्म के बोध-प्रद प्रसंगों का अंकन करता सुंदर म्युजियम भी बनाया है। जो राष्ट्रीय दर्शनीय स्थलों में मान्यता प्राप्त है।

कलकत्ता, यूके, केनिया, दुबई आदि अनेक देशों में स्थापित 'श्री चंदना विद्यापीठ' द्वारा भगवान महावीर के संदेशों को देश-विदेश में बसे भारतीय जनमानस विशेषकर युवा एवं बच्चों के जीवन में निष्पादित करने का कार्य पिछले कई वर्षों से निरंतर हो रहा है।

कला मर्मज्ञ श्री ताई माँ के हाथों में जादू है और उनके द्वारा निर्मित 'श्री ब्राह्मी कला मंदिरम्' अब तक ६५ लाख से अधिक पर्यटकों द्वारा देखा जा चुका है।

ताई माँ की हर दिन नए सूर्योदय के साथ, एक नई कार्य योजना होती है! संकल्प लेते हैं और उसको मूर्त रूप देने के लिए दृढ़ता से अग्रसर हो जाते हैं। ८७ वर्ष की आदरणीय वय में भी भविष्य की अनेक सुंदर योजनाओं के लिए कार्यरत हैं:

डायग्नोस्टिक सेंटर- बिहार, राजगीर एजुकेशनल रिसर्च सेंटर- कांदिवली, मुंबई प्रज्ञालयम् - पालीताना, गुजरात ई टीचिंग एजुकेशनल सेंटर- बेंगलुरु, कर्नाटक समोसरण प्रोजेक्ट- कच्छ, गुजरात गौतम गुरुकुल- राजगीर और परमानेंट एजुकेशन सेंटर- नेपाल

वीरायतन का यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विशाल सेवा कार्य संभव हो सका है सक्षम, कर्मठ एवं तेजस्वी साध्वी संघ के अद्भुत समर्पण से! कार्यकारिणी समिति के निष्ठावान एवं सम्माननीय कार्यकर्ता तथा समाज के भावनाशील एवं उदार सदस्यों के अत्यंत प्रेमपूर्ण सहयोग से। वीरायतन पिछले ५० वर्ष से निरंतर प्रगति कर रहा है। प्रबुध्द विचारक डॉ. अभय फिरोदिया जी की अध्यक्षता में वीरायतन का कार्य सुचारू रूप से संचालित है तथा समाज में आदर भाव से प्रतिष्ठित है।

श्रध्देय ताई माँ का यह विराट जीवन ! इस एक जीवन ने अनगिनत जीवन को अपने मातृत्वपूर्ण हाथों के स्पर्श से अमृतबोध बाँटा है। लाखों लोगों के लिए उत्साहवर्धक प्रेरणा प्रदान की है। शून्य में से सृजन करके पूर्णता प्रकट की हैं।

ऐसे अग्नि में कमल खिला देने वाले योगिराज !

'मुस्कान से मोक्ष' के प्रस्तोता । दिव्यातिदिव्य जीवन के साक्षात् स्वरुप ! अभिनन्दन ! अभिनन्दन !! अभिनन्दन !!! वन्दन! वन्दन! वन्दनानुवन्दन ! ●

(श्री अमर भारती - मार्च २०२३ अंक से साभार)

जैन समाजाच्या यशाचे व श्रीमंतीचे रहस्य

लेखक : प्रा. प्रकाश भोसले

ज्यांना गरिबीतून श्रीमंत व्हायचं आहे, त्यांनी जगातील सर्वांत श्रीमंत समाजाचा अभ्यास व निरीक्षण करावे. आज सर्वांत श्रीमंत समाज – जैन समाजाबद्दल माहिती घेऊ. भारतात अंदाजे ४५ लाख तर जगात ८० लाख लोकसंख्या जैन समाजाची आहे. जगातील ४३ देशात अधिकृत नोंदणीकृत असा जैन समाज आहे. जगातील ६०% डायमंड बिझनेस जैन समाज नियंत्रित करतो. शेअर्स, बँका, फायनान्स, मीडिया अशा अनेक कॉर्पोरेट व व्यापार क्षेत्रावर जैन समाजाचे नियंत्रण आहे. भारतातील एकूण कराच्या ३५% कर जैन समाजाने नियंत्रित केलेल्या उद्योगांमधून जातो. महात्मा गांधीजींच्या जीवनावर जैन तत्त्वज्ञानाचा प्रभाव व देश स्वतंत्र होण्यात सिंहाचा वाटा आहे.

ह्युमन डेव्हलपमेंट इंडेक्स प्रमाणित करणाऱ्या जगातील तज्ञांच्या मते जैन लाईफ स्टाईल जगातील सर्वांत परफेक्ट लाईफ स्टाईल मानली जाते. बचत, गुंतवणूक, अहिंसेवर श्रध्दा व शाकाहार, उपवासाच्या परंपरेमुळे मन व शरीर यांचे शुध्दीकरण होऊन सतत परिपक्व व परफेक्ट होत राहते. ९७% समाज बांधव सुशिक्षित असून जगातील सर्वाधिक साक्षर धर्म म्हणून जगाने नोंद घेतली आहे. ९० हून अधिक जैन बांधव स्वत:चा व्यवसाय करतात. आर्थिक विकासाच्या बाबतीत गुजरात मधील जैन बांधव सर्वाधिक पुढे असून ते बेल्जियम, अमेरिका, इंग्लंड इत्यादी देशातही स्थायिक झाले आहेत. जगभरातील जैन मंदिरे खूप सुंदर व श्रीमंत मंदिरे म्हणून ओळखली जातात. जैन समाजातील आर्थिक मागास लोकांना मदत करणेसाठी अनेक शैक्षणिक व सामाजिक संस्था समाज बांधव चालवतात. समाजातील एकमेकांना मदत करण्याचा खूप मोठा गुण जैन समाजात आढळतो.

जैन समाजातील काही व्यक्तींची नावे आपण पाहू. विक्रम साराभाई, अजित गुलाबचंद (एच सी सी), दिलीप संघवी (सन फार्मा), अंशू जैन (डश बँक), गौतम अडाणी (अडाणी ग्रुप), इंदू जैन (टाईम्स ग्रुप), नरेंद्र पटनी (पटनी कॉम्प्युटर), मंगल प्रभात लोढा (लोढा ग्रुप), वालचंद हीराचंद (वालचंद ग्रुप), मोतीलाल ओसवाल, अजित जैन (वर्कशायर यु.एस.ए.), राजा भोज, राजा बिंबीसार, अनुराधा पौडवाल (गायिका), कल्याणजी (संगीतकार), दर्शील सफारी (बाल अभिनेता), ओशो रजनीश (स्पिरीचुअल लिडर), कर्मवीर भाऊराव पाटील (रयत शिक्षण संस्था), चंद्रगुप्त मौर्य, तरुण सागर (तत्त्वज्ञानी), क्लाऊडीया (पॉप सिंगर, इटली), मायकल टॅबीयास (हॉलीऊड डायरेक्टर), संजय लीला भन्साळी, सूरज बरजात्या (हिंदी डायरेक्टर), आशा पारेख (अभिनेत्री), व्ही. शांताराम (फादर ऑफ इंडियन सिनेमा), राजा रवी वर्मा अशा अनेक व्यक्तींनी जगात असामान्य कर्तृत्व सिध्द केले आहे.

आज जगात वाढलेली हिंसा, गरीबी, आजार, रोगराई इत्यादींवर रामबाण कायमचा इलाज म्हणून जैन तत्त्वज्ञानातील अहिंसा, शाकाहार, उपवास इत्यादीचे सर्व जगभर फॉलोअर्स होत असून पाश्चिमात्त्य देशात कोट्यावधी लोक जैन तत्त्वज्ञानाप्रमाणे आपले जीवन जगून श्रीमंत, सुखी, निरोगी, आनंदी होत आहेत.

संपूर्ण जगाला अहिंसा, दया, क्षमा शांती, मैत्री, ''जगा आणि जगू द्या'' हा संदेश देणारे भगवान महावीर यांची २६२२ वा जन्म कल्याणक ४ एप्रिल २०२३ रोजी सर्वत्र उत्साहात साजरा झाला. जन्म कल्याणक निमित्त भ. महावीरांना अभिवादन ! ●

कव्हर तपशील - मे २०२३

❖ **वीरायतनचे ५० वर्ष**

प.पू. आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी ''श्री ताई माँ'' यांचा ८७ वा जन्मोत्सव व वीरायतनचे ५० वर्ष निमित्त वीरायतन येथे भव्य कार्यक्रमाचे आयोजन झाले. या निमित्ताने ''वीरायतन के ५० वर्ष'' हा लेख जैन जागृति मध्ये प्रसिध्द केला आहे.
(लेख पान नं. १५)

❖ **भगवान महावीर स्वामी २६२२ वा जन्म कल्याणक महोत्सव, पुणे**

पुणे : श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती तर्फे भव्य मल्टिमीडिया, धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमाचे आयोजन जय जिनेंद्र प्रतिष्ठान (नाजूश्री) येथे करण्यात आले. कार्यक्रमाचे प्रायोजक श्री. प्रकाशजी रसिकलालजी धारिवाल (माणिकचंद ग्रुप) यांच्या हस्ते दीप प्रज्वलन करुन कार्यक्रमाची सुरवात करण्यात आली.

यावेळी श्री जैन सामुदायिक उत्सव समितीचे अध्यक्ष श्री. अचलजी जैन, सचिव श्री. अनिलजी गेलडा, श्री. विजयकांतजी कोठारी इ. च्या हस्ते श्री. प्रकाशजी व सौ. दिनाजी धारिवाल यांचा सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाची सांगता उपस्थितीत सर्व भाविकांच्या हाती दिवा देऊन आरती व मंगल दिव्याने झाले. (बातमी पान नं. ८४)

❖ **श्री. तुषार गांधी – महावीर ज्ञान–विज्ञान पुरस्कार**

श्री जैन सामुदायिक उत्सव समिती व श्री सकल जैन संघ, पुणे च्या वतीने श्री. तुषारजी गांधी यांना जिन महावीर ज्ञान–विज्ञान पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. माजी मुख्यमंत्री श्री. पृथ्वीराजजी चौहान, इतिहासाचे गाडे अभ्यासक श्री. सदानंदजी मोरे, ज्येष्ठ गांधीवादी विचारवंत उल्हासजी पवार, समितीचे अध्यक्ष श्री. अचलजी जैन, श्री. लक्ष्मीकांतजी खाबिया, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. अनिलजी गेलडा इ. मान्यवरांच्या हस्ते पुरस्कार देण्यात आले. (बातमी पान नं. ९१)

❖ **रांका ज्वेलर्स, खराडी, पुणे – उद्घाटन**

पुणे, महाराष्ट्रातील प्रसिध्द सराफ रांका ज्वेलर्स यांचे खराडी, पुणे येथे १३ व्या दालनाचे उद्घाटन ८ एप्रिल २०२३ रोजी आमदार श्री. अजितदादा पवार, सौ. सुनेत्राताई पवार यांच्या हस्ते झाले. यावेळी रांका परिवारातील फतेचंदजी रांका, ओमप्रकाशजी रांका, डॉ. रमेशजी रांका, अनिलजी रांका, तेजपालजी रांका, वस्तुपालजी रांका, शैलेशजी रांका, मानवजी रांका व श्लोकजी रांका व इतर अनेक मान्यवर उपस्थित होते.
(बातमी पान नं. ६९)

❖ **जैन जागृति अंकाचे प्रकाशन**

भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त आयोजित भव्य धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमात जैन जागृति मासिक एप्रिल २०२३ भगवान महावीर जन्म कल्याणक विशेषांकाचे प्रकाशन उद्योजक श्री. प्रकाशजी धारिवाल, सौ. दिनाजी धारिवाल, सामुदायिक उत्सवाचे अध्यक्ष श्री. अचलजी जैन, उपाध्यक्ष श्री. विजयकांतजी कोठारी, सचिव श्री. अनिलजी गेलडा, जैन जागृतिचे संपादक श्री. संजयजी चोरडिया यांच्या हस्ते करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८४)

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे–पाणपोई उद्घाटन**

पुणे : स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्टच्या वतीने मार्केट यार्डात २८ मार्च २०२३ रोजी पाणपोईची सुरुवात करण्यात आली. पाणपोईचे उद्घाटन बाजार समितीचे सचिव दिगंबर हौसरे यांच्या हस्ते झाले. यावेळी काँग्रेसचे सरचीटणीस अभयजी छाजेड, दि पूना मर्चंटस् चेंबरचे अध्यक्ष राजेंद्रजी बाठिया, माजी अध्यक्ष पोपटलालजी ओस्तवाल, ट्रस्टचे अध्यक्ष अभयजी संचेती, मनिषजी संचेती, रिध्दीजी संचेती उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **पूना हॉस्पिटल – रक्तदान शिबीर**

पुणे : १० एप्रिल २०२३ रोजी स्व. श्री. मुकुंददासजी लोहिया यांच्या पाचव्या स्मृतिदिना निमित्त राजस्थानी आणि गुजराथी चॅरिटेबल फौंडेशनने पूना हॉस्पिटल मध्ये रक्तदान शिबीराचे आयोजन केले. यावेळी दिप प्रज्वलन करताना अध्यक्ष श्री. देवीचंदजी जैन, उपाध्यक्ष श्री. डाह्याभाई शहा, मॅनेजिंग ट्रस्टी श्री. राजकुमारजी चोरडिया, जॉईन मॅनेजिंग ट्रस्टी श्री. पुरुषोत्तमजी लोहिया, विश्वस्त श्री. राजेशजी शहा इ. मान्यवर. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **श्री. दिलीपजी चोरबेले, पुणे – सन्मान**

जैन सोशल ग्रुप्स इंटरनॅशनल फेडरेशनच्या वतीने मुंबई सायन येथे मानव सेवा हॉल मध्ये ॲवार्ड समारोह मध्ये दिलीप चोरबेले यांस संपूर्ण भारतातून बेस्ट जॉईंट सेक्रेटरी म्हणून प्रशस्तिपत्र आणि ॲवार्ड देऊन गौरव करण्यात आले. हा अवार्ड सुनिलजी सिघी, सदस्य भारतीय मायनॉरिटी कमिशन जैन समाज भारत सरकार, ललितभाई शाह अध्यक्ष JSGIF इंटरनॅशनल फेडरेशन, अभयजी नहार, सेक्रेटरी जनरल JSGIF इंटरनॅशनल फेडरेशन, आदी मान्यवरांच्या हस्ते देण्यात आले. (बातमी पान नं. ७१)

❖ **प्रा. डॉ. संजयजी चोरडिया – ॲवार्ड**

सूर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशन आणि बन्सी–रत्नी चॅरिटेबल ट्रस्टचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया यांना राज्यपाल रमेश बैस यांच्या हस्ते 'सीएसआर एक्सलन्स अवॉर्ड'ने सन्मानित करण्यात आले. मुंबईतील राजभवनातील दरबार हॉलमध्ये झालेल्या कार्यक्रमा वेळी राज्याचे उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष ॲड. राहुल नार्वेकर, हिंदुजा ग्रुपचे शोम हिंदुजा आदी उपस्थित होते.

❖ **सौ. सुषमा चोरडिया, पुणे – ॲवार्ड**

पुणे : शैक्षणिक व महिला सक्षमीकरण, बालकल्याण क्षेत्रातील उल्लेखनीय कार्याबद्दल सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशनच्या सौ. सुषमाजी एस. चोरडिया यांना प्राईड ऑफ महाराष्ट्र २०२३ पुरस्कार महाराष्ट्र राज्याचे राज्यपाल माननीय श्री. रमेशजी बैस, भारत सरकार मंत्री श्री. नारायणजी राणे यांच्या हस्ते देण्यात आला. सोबत प्रा. डॉ. संजयजी चोरडिया. (बातमी पान नं. ७४)

❖ **सौ. विमल बाफना, पुणे – ॲवार्ड**

पुणे येथील समाजसेविका सौ. विमल सुदर्शनजी बाफना यांना सिकंदराबाद मारवाडी महिला संघटन द्वारा स्त्री रत्न ॲवार्ड २०२३ मान्यवरांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ७६)

चट मंगनी, पट ब्याह

यद्यपि विवाह संबंध संयोग से बनते हैं, परंतु हम संयोग बनाने में आपकी मदद करते हैं । अगर आपके परिवार में कोई युवक या युवती विवाह योग्य हैं, और आप सर्वश्रेष्ठ चयन चाहते हैं, तो 'जैन जागृति' में वैवाहिक विज्ञापन छपवाइए ।